श्री कामेश्वर सिंह 'सहायक प्रोफेसर'
राजनीति विज्ञान, रोहतास महिला कालेज सासाराम।
वर्ग — बी० ए० पार्ट — I 'प्रतिष्ठा'
पत्र — प्रथम, यूनिट नं० — 12
राजनीतिक सिद्धान्त — डॉ० पुखराज जैन
दिनांक — 18-07-2020

जॉन ऑस्टिन के सम्प्रभुता का शेष भाग - - -

(3) सम्प्रभु की आज्ञा ही कानून है। ⟶
सम्प्रभु व्यक्ति की आज्ञा ही कानून है और उसके आदेश की अवहेलना करनेवाला दण्ड का भागी होता है। कोई भी परम्परागत व्यवहार तब तक कानून नहीं है जब तक कि सम्प्रभु द्वारा मान्यता प्राप्त न हो।

(4) ऑस्टिन के अनुसार एक राज्य में एक ही सम्प्रभु हो सकता है — ऑस्टिन के इस सिद्धान्त को एकलवादी सिद्धान्त भी कहते हैं। चाहे वह एक व्यक्ति में हो या एक व्यक्ति समूह में सम्प्रभुता के विभाजन का अर्थ है सम्प्रभुता का विनाश।

(5) सम्प्रभु निरंकुश एवं असीम है :— सम्प्रभुता स्वयं कानून का स्रोत है वह किसी प्रकार के कानून बंधन से सीमित, मर्यादित एवं नियंत्रित नहीं

नहीं है क्योंकि सम्प्रभुता स्वयं कानून का आधार है। इसलिए वह कानून से उपर है। इस प्रकार सम्प्रभु किसी के अधीन नहीं होता, सभी उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए विवश है एवं वह स्वयं किसी की आज्ञा का पालन नहीं करता है।

⑥ समाज का बहुसंख्यक भाग उस प्रधान व्यक्ति की आज्ञाओं का पालन करेगा →

यदि समाज के कुछ लोग जो अल्पसंख्यक में है उस सम्प्रभु व्यक्ति की आज्ञाओं का पालन नहीं भी करें तो उस सम्प्रभु की सम्प्रभुता पर कोई आँच नहीं आयेगा। वह अपनी जगह पर सर्वोच्च तथा श्रेष्ठ है। यदि समाज का अधिकांश भाग उसकी आज्ञाओं का पालन न करे तो भले ही समाज में अराजकता फैल सकता है।

अतः आस्टिन ने सम्प्रभुता की व्याख्या कानूनी दृष्टिकोण से करता है। उनकी सम्प्रभुता निरपेक्षात्मक, स्वेच्छाचारी, असीमित, अविभाज्य, सर्वव्यापक तथा स्थाई है।

उनाम्टिन के सिद्धान्त की आलोचना :—

जॉन आस्टिन पेशे से वकील था और उन्होंने सम्प्रभुता के सिद्धान्त की व्याख्या केवल वैधानिक दृष्टिकोण से किया है, व्यावहारिक दृष्टिकोण से नहीं। इसलिए उनके सम्प्रभुता सम्बन्धी

Scanned with CamScanner

सिद्धान्तों की विभिन्न विद्वानों ने कटु आलोचना की है जो इस प्रकार है —

(1) समाज में ऑस्टिन की जनश्रेष्ठ की खोज पाना कठिन है :—

ऑस्टिन ने जिस प्रकार से निश्चित सम्प्रभुता का वर्णन किया है उसे व्यवहार में खोज पाना कठिन है। सर हेनरी मेन ने लिखा है कि "इतिहास में इस प्रकार के निश्चित जनश्रेष्ठ के उदाहरण नहीं मिलते हैं।" उनके अनुसार पूर्व युग, मध्य युग, सामन्त युग में वास्तविक सम्प्रभु का पता लगाना कठिन था। वर्तमान समय में भी अमेरिकी संविधान में यह पता लगाना कठिन है कि निश्चित सम्प्रभु कौन है।

अतः अन्त में निष्कर्ष के शब्दों में कहा जा सकता है कि "समाज में वास्तविक शासकों की खोज नहीं जा सकता है।"

क्रमशः......

Scanned with CamScanner